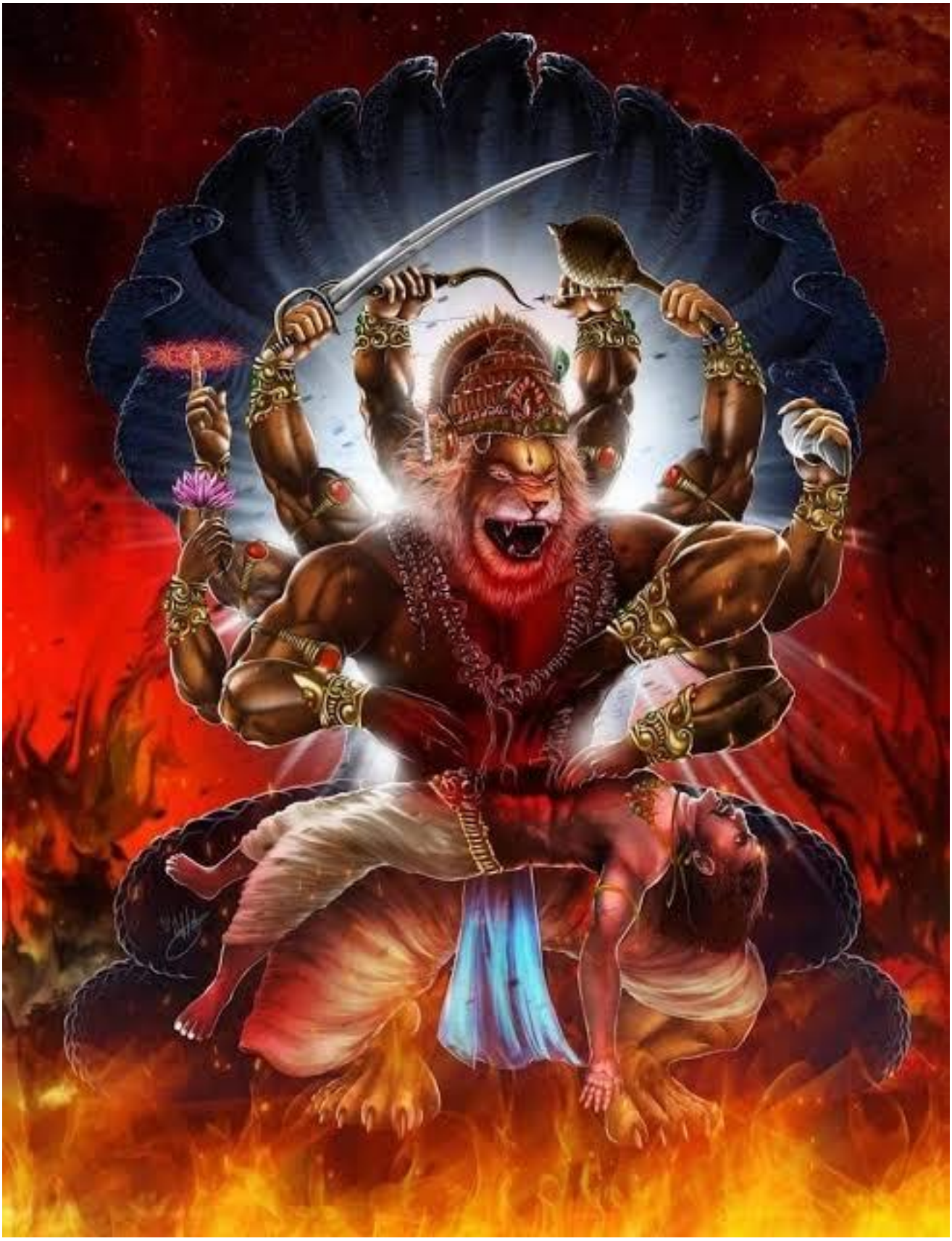

Sarv avtari narsimha bhagwan

सहस्र चन्द्रप्रतिमो दयालुर्लक्ष्मी मुखालोकन लोलनेत्रः।
दशावतारान्तरितः परितो नृकेशरी मंगलमातनोतु।।

आगम शास्त्र

जो सहस्र चन्द्रमा के समान शीतल दयालु, लक्ष्मी जी के मुख का अवलोकन करने के लिए चंचल नेत्र, दश अवतारों से परिवेष्टित उन भगवान नरसिंह चारों तरफ से हमारा मंगल का विस्तार करें।

May Lord Narasimha, who is as cool and kind as a thousand moons, who has playful eyes to observe the face of Goddess Lakshmi, who is surrounded by ten incarnations, expand our auspiciousness from all sides.

Viswaroopam of bhagwan narsimha

भगवन् नरसिंहरुपस्य विष्णोस्तातं जिंघासतः दृष्टं देहे मया सर्वलोक्यं भुर्भवादिकम् ब्रह्मा प्रजापतिश्चेन्द्रो रुद्रैः पशुपतिः सह वसवोऽष्टौ तथा आदित्या द्वादशाह क्षपा मही।

Vishnudharm Puran

In the lord narsimha ‘s form I saw in his body all planetary systems, brahma, rudra, indra, 8 vasus and 12 adityas- all of these constitute the expanded body of the lord

भगवान नरसिंह के रूप में मैंने उनके शरीर में सभी ग्रह, ब्रह्मा, रुद्र, इंद्र, 8 वसु और 12 आदित्य देखे – ये सभी भगवान के विस्तारित शरीर का निर्माण करते हैं।

नरसिंह उवाच

ब्रह्माविष्णुमहेशानां ह्यसंख्या सन्ति मद्वशे।

लक्ष्मी नारायण संहिता १.१४१.८

नरसिंह भगवान कहते हैं:- मेरे वश में अनगिनत ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं।

मरुतो देवगन्धर्वा ऋषयश्च तपोधनाः।

नागा यक्षाः पिशाचश्च राक्षसा भीमविक्रमाः।।

खादेव पशुपति स्थावराणि च सर्वाणि जंगमानि तथैव च।

भवांश्च सहितोऽस्माभि सर्वैर्दत्यगुणैवृतः।।

विमानशत संकीर्णा तथैव भवतः सभा।

सर्वं त्रिभुवनं राजंल्लाकधर्माश्च शाश्वताः।।

दृश्यन्ते नारसिंहेऽस्मिनस्थेतदम् अखिलं जगत्।

मत्स्यपुराण १६२.८-११

Marudganas, devgandharvas, rishis engaged in tapasya, nagas, rakshas, Pisachas, valourous rakshas and lord shiva are lodged therein. All of them are rotating in the forehead. All the moveables and immovables besides yourself surrounded by all daityas besides the assembly filled with numerous planes, all the three worlds everlasting lokadharmas besides the entire universe is lodged in the body of bhagwan narsimha

मरुद्गण, देवगंधर्व, तपस्या में लगे ऋषि, नाग, राक्षस, पिशाच, वीर राक्षस और भगवान शिव उसमें निवास करते हैं। ये सभी मस्तक में घूम रहे हैं। आपके अलावा सभी चल और अचल, सभी दैत्यों से घिरे हुए, कई विमानों से भरी सभा के अलावा, तीनों लोकों के शाश्वत लोकधर्मों के अलावा संपूर्ण ब्रह्मांड भगवान नरसिंह के शरीर में स्थित है।

लोकान् समुद्रान् सद्वीपान् सुरगन्धर्वमानुषमान्।
अजांडानां सहस्रं तु सटाग्रे तस्य दृश्यते।।
दृश्यते तस्य नेत्रेषु सोमसुर्य्यादयस्तथा।
कर्णयोरश्विनौ देवौ दिशश्च विदिशस्तथा।।
ललाटे ब्रह्मरुद्रौ च नभो वायुश्च नासिके।
इन्द्राग्री तस्य वक्त्रान्ते जिह्वायां तु सरस्वती।।
दंष्ट्रासु सिंहशार्दुलाः शरभाश्च महोरगाः।
कंठे च दृश्यते मेरुः स्कन्धेष्वपि महाद्रयः।।
देवतिर्य्यंगमनुष्याश्च बाहुष्वपि महात्मनः।
नाभौ चास्य अंतरिक्षं च पादयोः पृथ्वी तथा।।
रोमस्वोषधयः सर्वाः पादपा नखपंक्तिषु।
निश्वाशेषु वेदाश्च सांगोपांगसमन्विताः।
आदित्य वसवो रुद्रा विश्वदेवा मरुदगणाः।
सर्वांगेषु दृश्यते गंधर्वाप्सरसश्च ये।।

पद्मपुराण ६.२३८.९८-१०७

On the limbs of that narsimha, he saw world, seas, islands, gods, gandharvas, human beings , thousand cosmic eggs were seen on the top of his Mane. Similarly in his eyes were seen the moon, sun etc, aswinas, directions and intermediate directions. On his forehead were seen brahma, rudra, in his nose sky and air, in his mouth Indra and Agni, on his tongue saraswati, on his fangs lions, serpents, sarbhas, on his throat was seen meru and great mountains on his shoulders. On the arm of noble one lower animals and human beings, the atmosphere in his navel, earth was seen on his feet, on his hair all herbs were seen, in his breath vedas and upangas were seen. On all his limbs adityas, vasus, rudras, host of marutas, gandharvas and nymphs were seen.

उस नृसिंह के अंगों पर उन्हें विश्व, समुद्र, द्वीप, देवता, गंधर्व, मनुष्य दिखाई दिए, उनकी जटा के शीर्ष पर हजारों ब्रह्मांडीय अंडे दिखाई दिए। इसी प्रकार उनकी आंखों में

चंद्रमा, सूर्य आदि अश्विन, दिशाएं और मध्यवर्ती दिशाएं दिखाई देती थीं। उनके माथे पर ब्रह्मा, रुद्र, उनकी नाक में आकाश और वायु, उनके मुंह में इंद्र और अग्नि, उनकी जीभ पर सरस्वती, उनके दांतों पर सिंह, सर्प, सरभ, उनके गले में मेरु और उनके कंधों पर महान पर्वत दिखाई देते थे। भुजाओं में निम्न पशु और मनुष्य, नाभि में वायुमण्डल, पैरों में पृथ्वी, बालों में सारी जड़ी-बूटियाँ, श्वास में वेद और उपांग दिखाई देते थे। उनके सभी अंगों पर आदित्य, वसु, रुद्र, मरुतों के समूह, गंधर्व और अप्सराएँ दिखाई देती थीं।

अस्य देवाः शरीरस्था सागराः सरितस्तथा।
हिमवान् पारियात्रश्च ये चान्ये कुलपर्वताः।।
चंद्रमा सह नक्षत्रैः आदित्य अश्विनौ तथा।
धनदो वरुणश्चैव यमः शक्रः शचीपति।
नागा यक्षा पिशाचश्च राक्षसाः भीमविक्रमाः।।
ब्रह्मदेवः पशुपति ललाटस्थ विभान्ति वै।
स्थावराणि च भुतानि जंगमानि तथैव च।।

भवसहितोऽस्माभिः सर्वदैत्यगणैर्वृतः।
विमानशत संकीर्णा तथाभ्यन्तरजा सभा।।
सर्व त्रिभुवनं राजलोकधर्म शाश्वताः।
दृश्यते नारसिंहेऽस्मिन्यथेन्दो विमले जगत्।।
प्रजापतिश्चात्र मनुर्महात्मा ग्रहाश्च योगाश्च मही नभश्च।
उत्पातकालश्च धृतिः स्मृतिश्च रजश्च सत्वं च तपो दमश्च।।
सनतकुमारश्च महानुभाव विश्वे च देवाप्सरसश्च सर्वाः।
क्रोधश्च कामश्च तथैव हर्षो दर्पश्च मोहः पितरश्च सर्वे।।

महाभारत हरिवंश खिलभाग ३.५१

I can see all the devtas in the body of this man lion(narsimha) along with all the oceans, rivers, Himalayas and along with all that, all such mountains including star and the moon, the deities of wind and celestial singers, Aditya, Ashwin kumars, kubera, varuna, yama, Indra, Pisachas and fearsome rakshas, brahma and shiva- all these are

said to be residing in the forehead. With all the stationary and moving beings, surrounded by all kinds of demon armies, with hundred of flying vehicles, this internal assembly of ours encompasses the entire three lokas and the eternal world. All of them appear in the statue of narsimha just like a great mirror shows a pure reflection. Holding the gaze of the universe, it is visible throughout the entire sphere of moon. Prajapati, Mahatma manu, planets, yoga, earth, sky, utpatkal, dhriti, smriti, rajoguna, tapa and indriyasyama are all visible in the narsimha deity. All great being like sanatkumar, viswadev, all apsaras, lust, anger, joy, pride and attachment and all ancestors are all visible in it.

मैं इस नर सिंह (नरसिम्हा) के शरीर में सभी देवताओं को देख सकता हूं, साथ ही सभी महासागरों, नदियों, हिमालय और उन सभी के साथ, तारा और चंद्रमा सहित सभी पर्वत, हवा के देवता और दिव्य गायक, आदित्य, अश्विन कुमार, कुबेर, वरुण, यम, इंद्र, पिशाच और भयानक

राक्षस, ब्रह्मा और शिव- ये सभी माथे में निवास करने वाले कहे गए हैं। सभी प्रकार की राक्षसी सेनाओं से घिरे हुए, सैकड़ों उड़ने वाले वाहनों के साथ, सभी स्थिर और गतिशील प्राणियों के साथ, हमारी यह आंतरिक सभा पूरे तीन लोकों और शाश्वत दुनिया को कवर करती है। ये सभी नरसिम्हा की मूर्ति में वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे एक बड़ा दर्पण शुद्ध प्रतिबिंब दिखाता है। ब्रह्माण्ड की ओर दृष्टि रखते हुए, यह चंद्रमा के पूरे क्षेत्र में दिखाई देता है। प्रजापति, महात्मा मनु, ग्रह, योग, पृथ्वी, आकाश, उत्तप्तकल, धृति, स्मृति, रजोगुण, तप और इंद्रियस्याम सभी नृसिंह देवता में दिखाई देते हैं। सनतकुमार, विश्वदेव आदि सभी महान प्राणी, सभी अप्सराएँ, काम, क्रोध, हर्ष, अहंकार और मोह और सभी पूर्वज सभी इसमें दिखाई देते हैं।

kallesh15@gmail.com
By Kallesh thippeswamy

Narsimha mantra raj of narsimha tapani upanishad

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलंत सर्वतोमुखं।

नरसिंहम् भीष्णं भद्रं मृत्युर्मृत्य नमाम्यहम्।।

नरसिंह तापनी उपनिषद्

तेषु दलेषु नरसिंहहयग्रीवानुष्टुभमंत्रौ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलंत सर्वतोमुखं।

नरसिंहम् भीष्णं भद्रं मृत्युर्मृत्य नमाम्यहम्।।

त्रिपाद् विभुति महानारायण उपनिषद्

विष्णुः प्रद्युम्नयुक् शार्ङ्गी महास्ततः विष्णु ज्वलन्तं भृग्वीशो जलं पद्मासनं ततः हरिस्तु वासुदेवाय वैकुंठो विष्णुसंयुतः गदी सेन्दुनृसिहं भद्रम् एव च मृत्युमृत्युं

ततः शौरिर्भानारायणान्वितः नृहरेर्द्वाविंशदर्णोऽत्र मंत्र साम्राज्यदायकः।।

नारद पुराण ३.७१.१३-१५

त्रैलोक्यमोहनेन अपि विषप्याध्यरिमर्द्दुनः।
इं श्रीं ह्रीं ह्रें त्रैलोक्यमोहनाय विष्णवे नमः।।
उं हं इं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं।
नृसिंहम् भीष्णं भद्रं मृत्युर्मृत्य नमाम्यहम्।।

अग्नि पुराण अध्याय २९६ भी नरसिंह मंत्रराज तथा नरसिंह तापनी उपनिषद् को भगवान नरसिंह के लिए बताता है।

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं।
नृसिंहम् भीष्णं भद्रं मृत्युर्मृत्य नमाम्यहम्।।
ब्रह्मा मुनिरनुष्टुप् च छन्दोऽस्ति नृहरि सुरः।
मंत्रस्य तु पदेश्चैव प्रणवेनांग पंचकम्।।

मेरु तंत्र

मंत्र:- उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं।

नृसिंहम् भीष्णं भद्रं मृत्युर्मृत्य नमाम्यहम्।।

इस मंत्र ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप और देवता भगवान नरसिंह कहे गए हैं।

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं।

नृसिंहम् भीष्णं भद्रं मृत्युर्मृत्य नमाम्यहम्।।

ब्रह्माण्ड पुराण अहोभिलम् महात्म्य

अर्हिबुधन्य संहिता अध्याय ५५ भी नृसिंह मंत्रराज को अच्छे से समझाया है।

भक्त प्रह्लादकी रक्षाके लिये भगवान् नारायणका नृसिंहावतार

हरि संकर्षणांशेन नरसिंह वपुर्धरः।

विष्णु धर्मोत्तर पुराण
श्रीहरि के संकर्षण व्युह नरसिंह का रुप धारण किया

Form of bhagwan Shri Narsimha

पंचवक्त्रं महाभीमं कालानल समप्रभम्।
मुंडमालाधरं रौद्रंकंठहारेण शोभितम्।।
नागयज्ञोपवीतढथं पंचानन सुशोभितम्।
चंद्रमौली नीलकंठं प्रतिवचं त्रिलोचनम्।।
भुजैः परिघसंकाशैर्दशभिश्चोप शोभितम्।
अक्षसुत्रं गदां पभ्रं। शंखगोक्षीर सन्निभम्।।
धनुश्च मुसलंचैवतथाचक्रं महत्प्रभम्।
खड़्गं चशुलपाशौच नृसिंहरुद्र रुपिणम्।।
इंद्रगोपकनी लाभंचंद्रान स्वर्ण सन्निभम्।
पुर्वादि मोत्तरांतास्य मुर्ध्वास्य सर्व वर्णकम्।।
विश्वाणं सर्व जगतमाधारम् गिरिकन्यके।
शरीररक्तवर्णः। मुखेषुवर्णानां पंचकम्।।

अर्थवर्ण रहस्य, मंत्रसार

I worship that narsimha who has five faces, who is terrific, whose lustre is fire of death, who wears the garland of skull, who is very terrible, whose neck is adorned with necklace. He was adorned with serpents sacred thread and five faces. His head is adorned with moon, he has blue throat and three eyes. He also carried a bow, club and effulgent wheel. He carried a sword, trident, rope and has form of rudra.

मैं उन नृसिंह की पूजा करता हूं जिनके पांच मुख हैं और हर मुख में तीन नेत्र हैं, जो अद्भुत हैं, जिनकी चमक मृत्यु की आग है, जो कपाल की माला पहनते हैं, जो बहुत भयानक हैं, जिनकी गर्दन हार से सुशोभित है। वह नागों के जनेऊ और पांच मुखों से सुशोभित था। उनका सिर चंद्रमा से सुशोभित है, उनका गला नीला है और तीन आंखें हैं। उनके पास धनुष, गदा और तेजोमय चक्र भी था। उनके पास तलवार, त्रिशूल, रस्सी है और उनका रूप रुद्र का है

नरसिंह महाभीमं कालानल समप्रभम्।

मुंडमालाधरं रौद्रंकंठहारेण शोभितम्।।
नागयज्ञोपवीतढथं पंचानन सुशोभितम्।
चंद्रमौली नीलकंठं प्रतिवचं त्रिलोचनम्।।
भुजैः परिघसंकाशैर्दशभिश्चोप शोभितम्।
अक्षसुत्रं गदां पद्म शंखगोक्षीर सन्निभम्।।
धनुश्च मुसलंचैव बिभ्राण चक्रं उत्तमं।
खड़्गं चशुलपाशौच नृसिंहरुद्र रुपिणम्।।
इंद्रगोपकनी लाभंचंद्रान स्वर्ण सन्निभम्।
पुर्वादि चोत्तर यावदुद्धार्स्य सर्व वर्णकम्।

नारद पुराण ७१.५१-५६

I worship that narsimha who has five faces, who is terrific, whose lustre is fire of death, who wears the garland of skull, who is very terrible, whose neck is adorned with necklace. He was adorned with serpents sacred thread and five faces. His head is adorned with moon, he has blue throat and three

eyes. He also carried a bow, club and effulgent wheel. He carried a sword, trident, rope and has form of rudra.

मैं उन नृसिंह की पूजा करता हूं जिनके पांच मुख हैं और हर मुख में तीन नेत्र हैं, जो अद्भुत हैं, जिनकी चमक मृत्यु की आग है, जो कपाल की माला पहनते हैं, जो बहुत भयानक हैं, जिनकी गर्दन हार से सुशोभित है। वह नागों के जनेऊ और पांच मुखों से सुशोभित था। उनका सिर चंद्रमा से सुशोभित है, उनका गला नीला है और तीन आंखें हैं। उनके पास धनुष, गदा और तेजोमय चक्र भी था। उनके पास तलवार, त्रिशूल, रस्सी है और उनका रूप रुद्र का है

अतिरुद्रम् इदम् दुस्सह दुरतिक्रमम्।
दृष्टवा तु शंकिताः सर्वादेवतास्त्वामुपागता।।

नरसिंह पुराण

The form of narsimha is more terrifying and is exceedingly difficult to bear. All the gods looking bewildered, have approached you

नरसिम्हा का रूप अधिक भयानक है और उसे सहन करना अत्यंत कठिन है। सभी देवता भ्रमित होकर आपके पास आये हैं।

कालरुद्रात्मकं घोरं नृसिंहं दैत्यमर्दनम्।

पंचवक्त्रं महाभीमं कालानल समप्रभम्।

आनंदमालाधरं रुद्रंकंठहारेण शोभितम्।।

स्वर्णयज्ञोपवीतढथं पंचानन सुशोभितम्।

चंद्रमौली नीलकंठं प्रतिवक्रं त्रिलोचनम्।।

भुजैः परिघसंकाशैर्दशभिश्चोप शोभितम्।

अक्षसुत्रं गदां पद्म शंखगोक्षीर सन्निभम्।।

धनुश्च मुसलंचैवतथाचक्रं मर्दिरम्।

खड़्गं चशुलबाण नृसिंहघोर रुपिणम्।।

चंद्रांजनसुवर्णाभं ईन्द्रगोरौचनानिभम्।

नरवीरं हरिं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

पराशर संहिता

I worship that narsimha who has five faces, who is terrific, whose lustre is fire of death, who wears the garland of skull, who is very terrible, whose neck is adorned with necklace. He was adorned with serpents sacred thread and five faces. His head is adorned with moon, he has blue throat and three eyes. He also carried a bow, club and effulgent wheel. He carried a sword, trident, rope and has form of rudra.

मैं उन नृसिंह की पूजा करता हूं जिनके पांच मुख हैं और हर मुख में तीन नेत्र हैं, जो अद्भुत हैं, जिनकी चमक मृत्यु की आग है, जो कपाल की माला पहनते हैं, जो बहुत भयानक हैं, जिनकी गर्दन हार से सुशोभित है। वह नागों

के जनेऊ और पांच मुखों से सुशोभित था। उनका सिर चंद्रमा से सुशोभित है, उनका गला नीला है और तीन आंखें हैं। उनके पास धनुष, गदा और तेजोमय चक्र भी था। उनके पास तलवार, त्रिशूल, रस्सी है और उनका रूप रुद्र का है

न यस्य रुद्रो न पद्मयोनिः न इन्द्रो न सुर्येन्दुमरीचिमिश्राः।
न जानन्ति दैत्याधिप यत् स्वरुपं से वासुदेवः कलयावतीर्णः।।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण

जिसका रूप (नरसिंह का रूप) रुद्र, ब्रह्मा, इंद्र, सूर्य, चंद्र और राक्षस भी नहीं समझ सकते, वह वास्तव में वासुदेव है

हन्तुमभ्यागतं रौद्रं शरभं नरकेसरी ।

नखैर्विदारयामास हिरण्यकशिपुं यथा ।।

(Śeṣa Saṃhitā 23.14)

Narakesari should be meditated upon as the one who killed Rudra in the form of Sharabha by tearing him off with His nails as he did to Hiranyakashipu.

नरकेसरी का ध्यान उस रूप में किया जाना चाहिए जिसने शरभ के रूप में रुद्र को अपने नाखूनों से काटकर मार डाला था जैसा कि उसने हिरण्यकश्यप को किया था।

उं नमो भगवान् विष्णु आदिवैकुंठनायक....
अनेककोटि शरभभक्षणाय महात्मने।

विष्णुयामल तंत्र

नरसिंह भगवान जो आदिवैकुंठनायक हैं वे कोटि कोटि शरभ का भक्षण करते हैं।

ततः क्शणेन शरभो नादपुरितदिण्मुखः।
अभ्याशमगद्विष्णोः व्यनददैरवस्वनम्।।
स तमभ्यागतं दृष्टवा नृसिंहः शरभं रुषा।
नखैर्विदारयामास हिरण्यकश्यपु यथा।।

विष्णु तत्व संहिता ४५.८-९

Thereupon in a moment, the sound from sarabh's mouth intensified in all directions approaching vishnu with terrible roar. Narsimha having seen sarabh with that sound become furious, tore sarabh with his nails just like he did with demon hiranyakashipu

तदनन्तर एक क्षण में सरभ के मुख से तीव्र गर्जना के साथ विष्णु के पास पहुँचने वाली सभी दिशाओं की ध्वनि तेज हो गयी। नरसिम्हा ने सरभ को उस ध्वनि के साथ देखा और क्रोधित हो गए, उन्होंने राक्षस हिरण्यकशिपु की तरह ही सरभ को अपने नाखूनों से फाड़ दिया।

भो भो सुदर्शन नरसिंह.....सालवं संहारय शरभ कृतन्य रुद्रविद्रावय

सुदर्शन संहिता

सुदर्शन नरसिंह स्वयं शरभ के संहारक है।

रेमे रैवतके विष्णुर्यावदाभुतसंप्लवम्
शरभं शिवमास्कन्द्य नारसिंहं मुमोच सः।

लक्ष्मीनारायण संहिता

नरसिंह भगवान स्वयं अपने हाथों से शरभ का विनाश करते हैं।

ततः क्शणेन शरभो नादपुरितदिण्मुखः।
अभ्याशं अगमद्विष्णोर्विनदन् भैरवस्वरम्।।
स तमभ्यागतं दृष्टवा नृसिंहः शरभं रुषा।
जघान निशितैरुमैर्दंष्टानखवरायुधैः।।
निहते शरभे तस्मिन् रौद्रे मधुनिघातिना।
तुष्टवु पुण्डरीकाक्ष देवा देवर्षयस्तथा।।

नृसिंह पुराण, श्रीनिवास दीक्षित के द्वारा उद्धृत

Thereupon in a moment, the sound from sarabh’s mouth intensified in all directions approaching vishnu with terrible roar. Narsimha having seen sarabh with that sound become furious. After sarabha was slain by the furious attack of narsimha.

Sages and devas have praised bhagwan narsimha with great joy.

तत्पश्चात् एक क्षण में सरभ के मुख से तीव्र गर्जना के साथ विष्णु के पास पहुँचने वाली सभी दिशाओं की ध्वनि तेज हो गई। नरसिम्हा ने सरभ को उस ध्वनि के साथ देखकर क्रोधित हो गए। नरसिम्हा के प्रचंड प्रहार से सराभा के मारे जाने के बाद, ऋषि-मुनियों और देवताओं ने बड़ी प्रसन्नता से भगवान नरसिम्हा की स्तुति की है।

तं युद्धमानौ तु तदा चिरेण बलवत्तरौ।
न शमं जग्मतुर्दवौ नृसिंहशरभाकृती।।
ततः क्रुद्धो महाकायो नृसिंहो भीमनिस्सवनः।
सहस्त्रकरजैस्त्रस्तस्य गात्राणि पीडयन्।।
ततः स्फुरच्छटाचोटो रुद्रं शरभरुपिणम्।
विदारयन् नखैस्तीक्ष्णैः हिरण्यकशिपुर्यथा।।

ब्रह्माण्ड पुराण अहोभिलम् महात्म्य

Then the battle between narsimha and sarabha took place for a long time and both of them did not calm and fought fiercely. Afterwards lord filled with fury and with a massive form, with nails from thousand hands caught hold of sarabh form of shiva and tore upon the chest of sarabha using his sharp and deadly nails and killed sarabha avtar just like he did with hiranyakashipu

तब नरसिम्हा और सराभ के बीच काफी देर तक युद्ध होता रहा और दोनों शांत नहीं हुए और जमकर युद्ध किया। तत्पश्चात भगवान ने क्रोध से भरकर और विशाल रूप धारण कर, हजारों हाथों के नाखूनों से सरभ रूपी शिव को पकड़ लिया और अपने तेज और घातक नाखूनों से सरभ की छाती को फाड़ दिया और हिरण्यकशिपु की तरह ही सरभ अवतार को मार डाला।

सहस्त्रभुजदण्डस्य नृसिंहस्य महोजसि।
शरभः शलभो जातस्ततः कोऽन्यो परो हरेः।।

शाण्डिल्य संहिता ५.२.२२

Sarabha that was born of shiva was punished by bhagwan narsimha of great energy with thousands of arms. Who else is supreme but Hari?

शिव से जन्मे शरभ को हजारों भुजाओं वाले महान ऊर्जावान भगवान नरसिम्हा ने दंडित किया था। हरि के अलावा और कौन सर्वोच्च है?

शंकर जी के उपास्य देव :- श्रीभगवान नरसिंह

चंद्ररुद्रार्चितपादयुगल श्रीपद्महस्त सम्मर्दितदैत्यदेह।

नृसिंह पुराण १०.३३

ब्रह्मा और रुद्र के उपास्य देव भगवान नृसिंह है।

संकर्षणो नृसिंहेन अंतर्यामी शिवस्तु।

प्रकाश संहिता

संकर्षण नृसिंह स्वरुप ही शिवजी के अंतर्यामी है।

अंतर्यामिन्प्रभो मे त्वं त्वां बिना विग्रहः कुतः।

स्कन्द पुराण २.२.४.४९

शंकर स्वयं कहते हैं:- हे प्रभो! नृसिंह! आप ही मेरे अंतर्यामी है।

तामसीं मूर्तिं प्रकृतिमात्मनः सङ्कर्षण संज्ञामात्म समाधिरूपेण सन्निधाप्यैतदभिगृणन् भव उप-धावति ॥

श्रीमद्भागवत ५.१७.१६

रुद्र स्वयं संकर्षण का ध्यान करते हैं।

संकर्षणात्मको रुद्र

विष्णु पुराण २.५.१९

संकर्षण नृसिंह रुद्र के अन्तरात्मा है।

संकर्षण अंश इति उक्तो लयकृत्स सदाशिवः।

~लक्ष्मी नारायण संहिता

लय के रचयिता सदाशिव को संकर्षण का अंश कहा जाता है।

नृसिंहरुपेण देवं प्रद्ध्यौ भगवान् शिव।।

गरुड़ पुराण

अनादि अनंत शिव उन भगवान नृसिंह का भयानक स्वरुप का ध्यान करने लगे जो समस्त जीवों के हृदय में भय उत्पन्न कराता है।

देवेश्वेरस्यापि नृसिंह मुर्त्तेः पुजां विधते त्रिपुरान्धकारी।

मत्स्यपुराण

देवेश्वर त्रिपुरान्धकारी शिव जी भी भगवान नृसिंह भगवान का पुजा करते हैं।

ईश्वरेण व्रतं चीर्णं वधार्थं त्रिपुरस्यच।

व्रतस्यास्य प्रभावेण त्रिपुरस्तु निपातितः।।

पद्मपुराण

ईश्वर शंकर जी ने नृसिंह व्रत के कृपा से त्रिपुरासुर का वध किया।

भगवान् नृसिंहकी प्रह्लादसे क्षमा-प्रार्थना

॥ श्री नृसिंह द्वादशनाम स्तोत्रम् ॥

Shri Narsimha dwadash naam stotram

अस्य श्रीनृसिंह द्वादशनामस्तोत्र महामन्त्रस्य वेदव्यासो भगवान् ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः लक्ष्मीनृसिंहो देवता श्रीनृसिंह प्रीत्यर्थे विनियोगः ।

ध्यानम् ।

स्वभक्त पक्षपातेन तद्विपक्ष विदारणम् ।

नृसिंहमद्भुतं वन्दे परमानन्द विग्रहम् ॥

स्तोत्रम् ।

प्रथमं तु महाज्वालो द्वितीयं तूग्रकेसरी ।

तृतीयं वज्रदंष्ट्रश्च चतुर्थं तु विशारदः ॥ १ ॥

Firstly great flame , secondly the angry lion,

Thirdly one with diamond like teeth ,

Fourthly the great expert.

सबसे पहले महान ज्वाला, दूसरे क्रोधित सिंह,

तीसरा हीरे जैसे दांतों वाला,चौथे महान विशेषज्ञ.

पञ्चमं नारसिंहश्च षष्ठः कश्यपमर्दनः ।

सप्तमो यातुहन्ता च अष्टमो देववल्लभः ॥ २ ॥

Fifthly the Man-lion, Sixthly the killer of hiranyakasyapu

Seventhly Killer of Asuras and eighthly the Lord of devas.

पाँचवाँ मानव-सिंह, छठा हिरण्यकशिपु का संहारक

सातवें असुरों के संहारक और आठवें देवताओं के भगवान।

नव प्रह्लादवरदो दशमोऽनन्तहस्तकः ।

एकादशो महारुद्रो द्वादशो दारुणस्तथा ॥ ३ ॥

Ninthly The one who blessed Prahlada, tenthly the one with endless hands,

Eleventh the great God who is angry and twelfth the one helps at right time.

नौवीं वह जिसने प्रह्लाद को आशीर्वाद दिया, दसवीं वह जिसके अनंत हाथ हैं,

ग्यारहवें महान देवता जो क्रोधित होते हैं और बारहवें वह जो सही समय पर मदद करते हैं।

द्वादशैतानि नामानि नृसिंहस्य महात्मनः ।
मन्त्रराजेति विख्यातं सर्वपापविनाशनम् ॥ ४ ॥

These twelve names of the great God Narasimha,

Is called the **king of chants** and destroys all sins.

महान भगवान नरसिम्हा के ये बारह नाम, **मंत्रों का राजा** कहा जाता है और सभी पापों का नाश करता है।

क्षयापस्मारकुष्ठादि तापज्वरनिवारणम् ।
राजद्वारे महाघोरे सङ्ग्रामे च जलान्तरे ॥ ५ ॥
गिरिगह्वार आरण्ये व्याघ्रचोरामयादिषु ।
रणे च मरणे चैव शमदं परमं शुभम् ॥ ६ ॥
शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।
आवर्तयेत्सहस्रं तु लभते वाञ्छितं फलम् ॥ ७ ॥

This cures Tuberculosis, epilepsy , leprosy and Typhoid,And is helpful in gate of the king, in horrible wars and inside water.It helps in mountains and forests populate by tigers and robbers,And in war and death it helps to get out safely and later attain salvation.Repeating hundred times would help you get out of diseases and imprisonment,And repeating it one thousand times would help you get what you want.

इससे क्षय रोग, मिर्गी, कुष्ठ रोग और टाइफाइड ठीक होता है।और राजा के द्वार में, भयानक युद्धों में और जल में सहायक होता है।यह बाघों और लुटेरों द्वारा आबाद पहाड़ों और जंगलों में मदद करता है,

और युद्ध और मृत्यु में यह सुरक्षित बाहर निकलने और बाद में मोक्ष प्राप्त करने में मदद करता है।सौ बार दोहराने से आपको बीमारियों और कारावास से बाहर

निकलने में मदद मिलेगी,और इसे एक हजार बार दोहराने से आपको वह पाने में मदद मिलेगी जो आप चाहते हैं।

यन् नाम स्मरनाद् भीथाः भूतवेतालराक्षस।
रोगद्यश्च प्रणस्यन्ति भीषणं तं नमाम्यहम्।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत अर्हिबुधन्य संहिता

शंकर भगवान कहते हैं:- जिनके नाम का स्मरण करने से भूत, पिशाच तथा राक्षसों से डरने वाले तथा लोगों के सारे रोग दूर हो जाते हैं,उस नृहरि को मैं नमस्कार करता हूँ

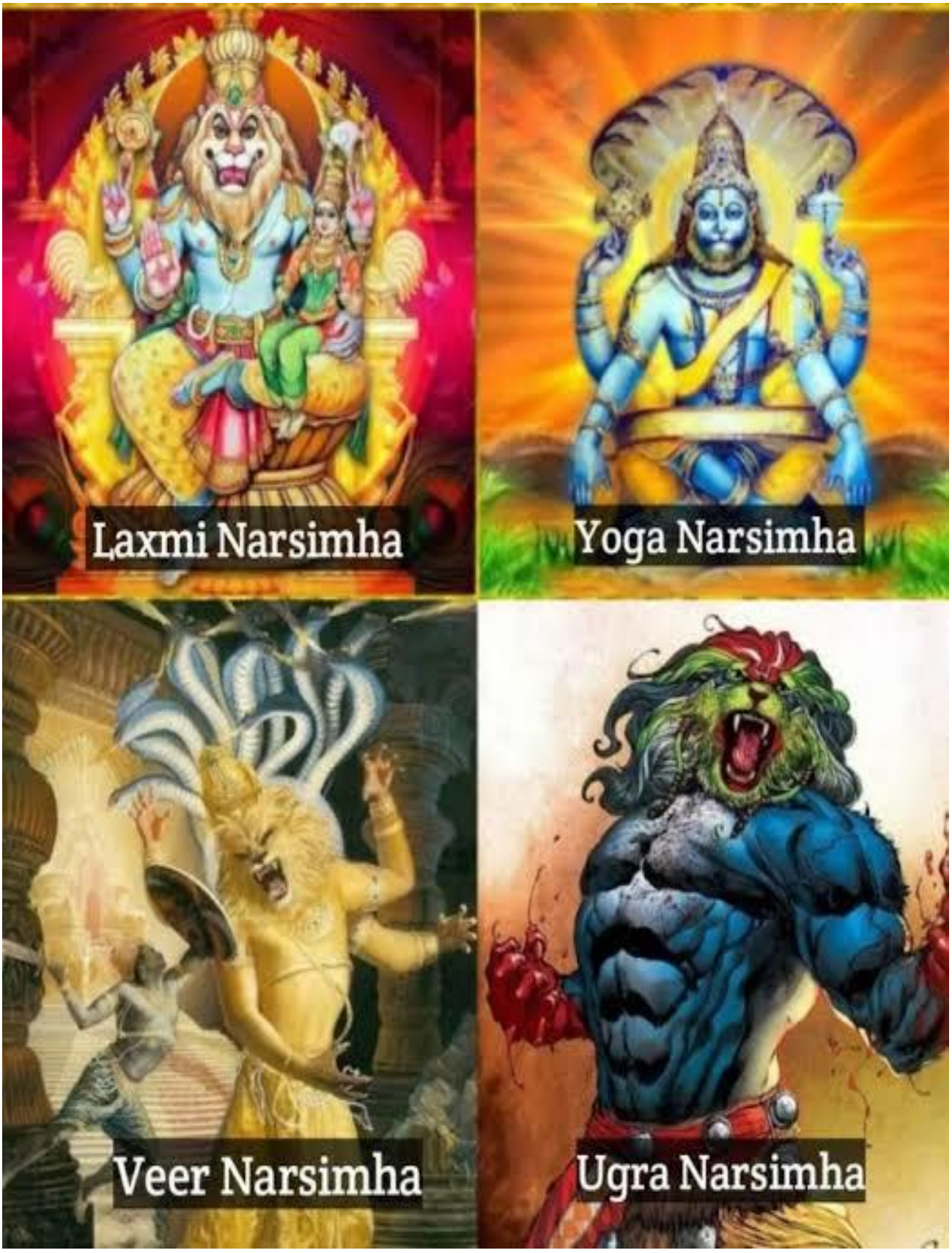
Laxmi Narsimha
Yoga Narsimha
Veer Narsimha
Ugra Narsimha